2020

HINDI

(Major)

Paper : 6.5

(Pradeshik Sahitya : Asamiya)

Full Marks : 60

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×7=7

(क) 'लाचित बरफुकन' नामक ऐतिहासिक तथ्यों से पूर्ण ग्रंथ के रचयिता कौन हैं?

(ख) "आहाँ आहाँ, मोर बुकुर ओपरत मूर थोवा। प्राणभरि कलिजाटोर शब्द शुनि लोवाँ।" यह किसका कथन है?

(ग) "असमिया भाषा ब्रह्मपुत्र नद के प्रवाह की तरह राज्य के मध्य निरंतर प्रवाहित है और आगे भी जारी रहेगी।" यह किनका उद्गार है?

(घ) श्री श्री माधवदेव का जन्म कहाँ हुआ था?

(ङ) रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के पिता कौन थे?

(च) कौन 'असम केशरी' की आख्या से प्रसिद्ध हैं?

(छ) 'अरुणोदय' नामक पत्रिका का प्रकाशन कब शुरू हुआ था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अत्यंत संक्षेप में दीजिए : 2×4=8

(क) ''मन मेरि राम चरणहि लागु।
तइ देखना अन्तक आगु॥''

—का आशय बताइए।

(ख) श्रीमंत शंकरदेव द्वारा विरचित किन्हीं चार अंकीया नाटों का नामोल्लेख कीजिए।

(ग) 'असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा' की स्थापना कब और कहाँ हुई थी?

(घ) ''बाटरुवा जोवा तुमि निज घरलइ
एइ बाटे नाहिबा दुनाइ।''

—का भाव स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×3=15

(क) असमिया भाषा की प्राचीनता पर एक टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

(ख) शंकरदेव-माधवदेव के समकालीन वैष्णव कवि राम सरस्वती की साहित्यिक देन पर प्रकाश डालिए।

(ग) ''गोपीर बचने बर लोभ पाइ
नाचिल नानान भावे।''

—का संदर्भ एवं आशय बताइए।

(घ) ''केवल कथार फुलजारिते
मातृस्तनर धार-ऋणटो
नहब तोर सुजा।''

—कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

(ङ) 'गह्वर' शीर्षक कहानी के उद्देश्य का खुलासा कीजिए।

(च) कवयित्री नलिनीबाला देवी की साहित्यिक देन को रेखांकित कीजिए।

4. श्री श्री माधवदेव की साहित्यिक देन का मूल्यांकन कीजिए। 10

अथवा

असमिया रोमान्टिक काव्यधारा की विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

5. 'बीण-बरागी' शीर्षक कविता के प्रतिपाद्य की समीक्षा कीजिए। 10

अथवा

पात्र-योजना की दृष्टि से 'बिचित्र' शीर्षक कहानी की आलोचना कीजिए।

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

अरविन्द निन्दि पाव नव पल्लव
रतन नूपुर परकाशा।
भकत परम धन ताहे भजोक मन
शंकर एहु अभिलाषा॥

अथवा

जन्म-भूमिर रस-रूपेरे
नदन-बदन पुष्ट होवा-प्राण,
एलेहुवा कर्मभीरुर
नहय फाँकिर भोग-बिलासर गान।

★★★